International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में लॉकडाउन का स्वरोजगार पर प्रभाव : एक विष्लेषणात्मक अध्ययन

Param Singh[1], Dr. O.P.Singh[2]

[1]Research Scholar,Dept. of Economics, NREC College, Khurja, Bulandshahr, U.P. Affiliated with CCS University Meerut, Address- Mohalla Bheemnagar Colony, Khushalgarh Road, Bheemnagar Colony, Anupshahr, Bulandshahr,
[2]Professor, Dept. of Economics, NREC College, Khurja, Bulandshahr, U.P.

शोध सारांष

कोरोना महामारी के दौरान लगाए गये लॉकडाउन में आर्थिक गतिविधियों के रूक जाने से रोजगार में लगे लोग तो प्रभावित हुए ही हैं, लेकिन स्वरोजगार में लगे लोग इस दौरान बुरी तरह प्रभावित हुए। भारत मे कोरोना संकट से उबरने के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से सहायता पहुँचायी जा रही है। इस दौरान प्राथमिक क्षेत्र की अपेक्षा द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में संगलग्न लोगों को कहीं अधिक नुकसान हुआ। स्वरोजगार में लगे लोगों को अपने उत्पादन कार्य को बन्द करना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप वे अपनी दैनिक आवष्यकताओं को पूरा कर पाने में असमर्थ हो गये। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेष राज्य के जनपद बुलन्दषहर में स्वरोजगार में संलग्न कुल 50 लोगों से साक्षात्कार प्रष्नावली के माध्यम से सूचनाएं एकत्र कर विष्लेषण किया गया है। विष्लेषण में पाया कि स्वरोजगार में संलग्न लोगों की आय में कमी होने के कारण बचत एवं सरकारी मदद के सहयोग से लॉकडाउन के प्रभाव को सहन कर सके।

कोरोना के कारण लगे लॉकडाउन का स्वरोजगार में लगे लोगों, छोटे–मोटे काम धंधे करके परिवार चलाने वाले लोगों को घर बैठना पड़ा, जिससे उनकी आमदनी का कोई श्रोत नहीं बचा। परिणामस्वरूप उनमें नकारात्मक भावनाएं हावी होने लगीं। इंडियन सोसाइटी ऑफ लेबर इकोनॉमिक्स (आईएसएलई) के एक सर्वे से पता चला है कि कोरोना संकट का सर्वाधिक गंभीर प्रभाव जो वर्तमान में महसूस किया गया, वह है लोगों की नौकरियों का समाप्त होना तथा स्वरोजगार सम्बन्धि गतिविधियों का रूक जाना।

कोरोना महामारी के चलते लगी पाबंदियों की वजह से दुनियाभर की अर्थव्यवस्थाओं की रफ्तार मंद पड़ चुकी है। कहा जा रहा है कि 1930 की महामंदी के बाद वैष्विक अर्थव्यवस्था के लिहाज से ये सबसे बुरा दौर रहा है। लॉकडाउन के दौरान देष में स्वरोजगार से जुड़े तमाम लोग बेरोजगार हो गये। विदेषों से आयात–निर्यात बन्द होने से ना तो उद्योगों के लिए कच्चा माल मिल पाया और ना ही उनके द्वारा पहले से तैयार सामान के लिए कोई खरीददार। भारत में इससे पूर्व कभी लॉकडाउन नहीं लगा था इसलिए आमजन आषंकाओं के साथ अपने भविष्य की चिंताओं से घिर गया, पूरे देष में कोरोना संक्रमण को बढ़ने से रोकने के लिए सरकार को लोकडाउन लगाना पड़ा जिससे रोजगार के साथ–साथ स्वरोजगार मे लगे लोगों की आमदनी के श्रोत बन्द हो गये।

भारत में लॉकडाउन पाँच चरणों में लगा जिसमें पहला चरण 25 मार्च से 14 अप्रैल तक 21 दिन, दूसरा चरण 15 अप्रैल से 3 मई तक 19 दिन, तीसरा चरण 4 मई से 17 मई तक 14 दिन, चौथा चरण 18 मई से 31 मई तक 14 दिन एवं पाँचवा चरण 1 जून से 30 जून तक 30 दिनों के लिए लगाया गया। इसमें प्रतिदिन की आमदनी के आधार पर जीवन चलाने और स्वरोजगार से जुड़ें तमाम लोग जिनमें, स्ट्रीट वेंडर (फेरी वाले), फलों की दुकान लगाने वाले, खाने–पीने के सामानों के ठेले लगाने वाले, रिक्षा व टैक्सी चालक, हेयर कटिंग सैलून, ब्यूटी पार्लर चलाने वाले, जूस सेंटर वाले आदि संकट में आ गये।

कोरोना महामारी की चुनौतियों और खतरों से निपटने के लिए केन्द्र सरकार ने प्रधान मंत्री गरीब कल्याण योजना, आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना, अटल बीमित व्यक्ति कल्याण योजना, प्रधान मंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) आदि योजनाओं की सुरूआत की है। कोरोना काल में स्वरोजगार में लगे लोगों पर लॉकडाउन का बहुत बुरा प्रभाव तो था ही साथ ही जब देष विदेष से प्रवासी अपने रोजगार खोकर घर वापस लौटे तो उन्होने भी स्वरोजगार कर जीवन यापन करना चाहा परन्तु बंदिषों के कारण वे स्वरोजगार शुरू नहीं कर सके।

साहित्य पुनरावलोकन

Indrajit Bairagya (2021), ने "Effect of Covid-19 pandemic on the Rural Non-farm Self-employed in India: Does Skill Make a Difference?" विषय पर अपने शोध में कर्नाटक राज्य में पाया कि स्वरोजगार में लगे 98.75 प्रतिषत लोगों का व्यवसाय कोरोना के कारण नकारात्मक रूप से प्रभवित हुआ। आय के सवाल पर 94.5 प्रतिषत लोगों ने बताया कि लॉकडाउन के

कारण उनकी आय में कमी आयी है। अपने अध्ययन में उन्होने पाया कि कुषल व्यक्तियों के मुकाबले अकुषल व्यक्तियों का आय का अधिक नुकसान उठाना पड़ा।

Sona Mitra and Dipa Sinha (2021) "Covid-19 and women's Labour Crisis", विषय से सम्बन्धित अपने अध्ययन में पाया कि लॉकडाउन के दौरान अनौपचारिक क्षेत्र में संलग्न महिलाओं में एक तिहाई महिला श्रमिकों को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी। इस दौरान उनकी आय में आधे से भी अधिक की कमी आयी। ग्रामीण महिला श्रमिकों के मुकाबले शहरी श्रमिक इस दौरान ज्यादा बुरी तरह प्रभावित हुयीं।

Jessica Li (2021) ने "Impact of Covid-19 on Self Employed Women in India" विषय पर अपने अध्ययन में पाया कि लॉकडाउन के दौरान यातायात के साधनों के बंद हो जाने से स्वरोजगार में लगे लोग बुरी तरह प्रभावित हुए। पुरूष श्रमिकों के मुकाबले महिला श्रमिक लॉकडाउन के दौरान अधिक संकट की स्थिति में पहूँच गयीं थी।

Sandeep Rawat and Kopal Saxena (2020), "Assessing the Impact of Covid-19 Pandemic on Economic Condition of Employees- with special reference ot Lucknow District of Uttar Pradesh" से सम्बन्धित अपने अध्ययन में पाया कि भारत में सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजि क्षेत्र में कार्यरत लोगों पर कोरोना का प्रभाव लगभग एक समान पड़ा। दोनो ही क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों की मासिक आय, बचत, उपभोग व्यय, आवष्यकताओं की पूर्ति समान रूप से प्रभावित हुई। इन्होने सुझाव दिया कि सरकार को इस संकट से उबरने के लिए सार्वजनिक एवं निजि क्षेत्र के श्रमिकों के लिए एक समान योजना बनानी चाहिये।

डॉ0 जीत सिंह एवं डॉ0 प्रीति यादव, (2022)" An Analysis of Employment Status During Covid times" विषय पर अपने शोध में पाया कि भारत में अनौपचारिक क्षेत्र से जुड़े 90 प्रतिषत लोग कोरोना काल में बुरी तरह प्रभावित हुए। इस दौरान 50 प्रतिषत औपचारिक क्षेत्र मे संलग्न वेतनभोगी श्रमिक अनौपचारिक क्षेत्र में शामिल हो गये। इस दौरान उनकी आय में भी गिरावट आयी। पुरूषों के मुकाबले महिला बेरोजगारी दर कहीं अधिक रही। ग्रामीण क्षेत्र के वे श्रमिक जो शहरी क्षेत्रों मे मजदूरी कर जीवन यापन करते हैं, सरकारी सहायता पाने हेतु पात्र नहीं होने के कारण अपने गाँव वापस लौटने को मजबूर हुए।

शोध के उद्देष्य

- कोरोना के कारण लॉकडाउन के लगने से स्वरोजगार में लगे लोगों की आय पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वरोजगार मे संलग्न लोगों की बचत पर लोकडाउन के प्रभाव का अध्ययन करना।
- लॉकडाउन के दौरान स्वरोजगार में संलग्न लोगों द्वारा महसूस की गयी समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध क्षेत्र–प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेष के जनपद बुलन्दषहर की तहसील अनूपषहर के अन्तर्गत किया गया है। अनूपषहर गंगा नदी के दायें किनारे पर बसा एक धार्मिक नगर पालिका क्षेत्र है। यहां असंगठित क्षेत्र में स्वरोजगार से जुड़े लोगों की आय का एक प्रमुख श्रोत लोगों का धार्मिक कार्यो के लिए आना है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार अनूपषहर की जनसंख्या 29087 है।

शोध की उपयोगिता– प्रस्तुत शोध में स्वरोजगार में संलग्न लोगों की समस्याओ का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। सरकार द्वारा स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए चलायी जा रही योजनाओं तथा उनके लाभार्थियों पर लॉकडाउन के दौरान समस्याओं को जानने और उनके समाधान में सहयोग के तरीके खोजना बहुत आवष्यक है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन आवष्यक है।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित जानकारी जुटाने हेतु प्रष्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रष्नावली स्वयं शोधार्थी द्वारा अनुसूचि विधि से भरवायी गयी हैं। शोध हेतु किराना दुकानदार, ऑटो चालक, ई–रिक्शा चालक, सैलून, वैल्डिंग, फेरी वाले, मकैनिक, सड़क किनारे जूस, फल अन्य सामान बेचने वाले वेंडर आदि से उद्देष्यपूर्ण निदर्षन या निर्णयात्मक निदर्षन के अनुसार अनुसूचियां भरवायी गयी हैं। विष्लेषण के लिए विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध विष्लेषण–

प्रश्नावली का विष्लेषण

सारणी सं0–1–लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण।

क्रम सं.	लिंग	कुल	प्रतिशत
1	पुरूष	40	80
2	महिला	10	20
	कुल	**50**	**100**

श्रोतः प्रष्नावली के माध्यम से प्राथमिक आँकड़ो का संकलन।

व्याख्या–उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि अधिकांष उत्तरदाता पुरूष जोकि 80 प्रतिषत हैं जबकि महिला उत्तरदाताओं का प्रतिषत 20 ही है। अतः हम कह सकते हैं कि महिला उत्तरदाताओं की तुलना में पुरूष उत्तरदाताओं का आधिक्य है।

सारणी सं0–2–आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण।

क्र.सं	आयु (वर्ष में)	संख्या	प्रतिशत
1	20 से कम	1	2
2	20–40	35	70
3	40–60	12	24
4	60 से अधिक	2	4
	कुल	**50**	**100**

श्रोतः प्रष्नावली के माध्यम से प्राथमिक आँकड़ो का संकलन।

व्याख्या–उपरोक्त सारणी के आधार पर 20 वर्ष से कम आयु के उत्तरदाताओं की संख्या सबसे कम है जबकि 20–40 वर्ष के उत्तरदाताओं की संख्या सबसे अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि लक्षित समूह में 20–40 आयु वर्ग के उत्तरदाताओं का प्रतिषत (70%) सर्वाधिक है।

सारणी सं0–3–षैक्षिक योग्यता के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण।

क्र.सं	शैक्षिक योग्यता	संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	7	14
2	प्राथमिक स्तर	14	28
3	माध्यमिक स्तर	20	40
4	उच्च स्तर	9	18
5	अन्य	0	0
	कुल	**50**	**100**

श्रोतः प्रष्नावली के माध्यम से प्राथमिक आँकड़ो का संकलन।

व्याख्या–सारणी संख्या 3 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि लक्ति समूह द्वारा प्राप्त में 14 प्रतिषत उत्तरदाता अषिक्षित हैं जबकि 28 प्रतिषत ने प्राथमिक स्तर की षिक्षा प्राप्त की है। 40 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने माध्यमिक स्तर तक की षिक्षा प्राप्त की है जबकि 18 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने उच्च षिक्षा प्राप्त की है। इसलिए हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर की षिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक है।

सारणी सं0–4–व्यवसाय में संलग्नता के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण।

क्र.सं	व्यवसाय	संख्या	प्रतिषत
1	प्राथमिक क्षेत्र	7	14
2	द्वितीयक क्षेत्र	8	16
3	तृतीयक क्षेत्र	35	70
	कुल	**50**	**100**

श्रोतः प्रष्नावली के माध्यम से प्राथमिक आँकड़ो का संकलन।

व्याख्या–उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि अधिकांष उत्तरदाता (70%) तृतीयक क्षेत्र अथवा सेवा क्षेत्र से सम्बन्ध रखते हैं तथा प्राथमिक क्षेत्र से जुड़े उत्तरदाताओं का प्रतिषत सबसे कम है। अतः हम कह सकते हैं कि अध्ययन क्षेत्र में तृतीयक क्षेत्र अग्रणी भूमिका में है।

सारणी सं0–4–स्वरोजगार क्रियाओं पर लॉकडाउन से प्रभावित लोगों का प्रतिशत

उत्तर	नकारात्मक प्रभाव		आय में कमी	
	संख्या	प्रतिषत	संख्या	प्रतिशत
हाँ	48	96	47	94
नहीं	2	4	3	6
कुल	**50**	**100**	**50**	**100**

श्रोतः प्रष्नावली के माध्यम से प्राथमिक आँकड़ो का संकलन।

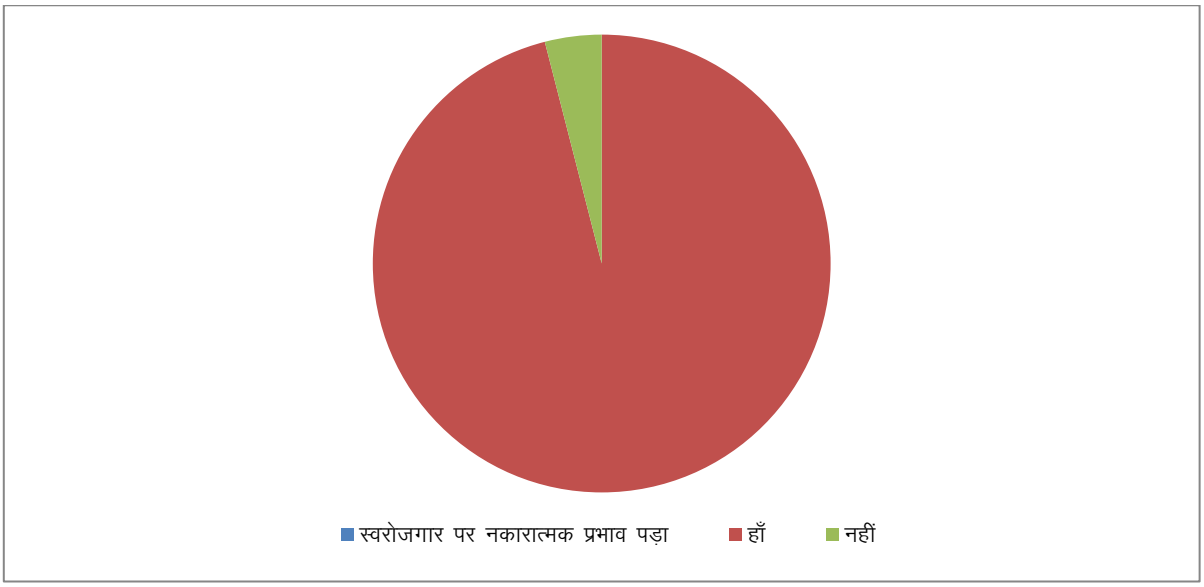

व्याख्या–उपरोक्त तालिका के अनुसार 96 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि लॉकडाउन के दौरान उनका व्यवसाय नकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ, जबकि 4 प्रतिषत ने इसे नकार दिया। 94 प्रतिषत लोगों ने माना कि लॉकडाउन के कारण उनकी आय में बहुत तेजी से गिरावट आयी जबकि 6 प्रतिषत ने आय में गिरावट के प्रभाव को महसूस नहीं किया। अतः हम कह सकते हैं कि अधिकांष उत्तरदाता व्यवसाय एवं आय के हिसाब से नकारात्क रूप से प्रभावित हुए।

सारणी सं0–6–लॉकडाऊन के दौरान बचत में कमी के सम्बन्ध में विष्लेषण

क्र.सं	उत्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	46	92
2	नहीं	4	8
	कुल	**50**	**100**

श्रोतः प्रष्नावली के माध्यम से प्राथमिक आँकड़ो का संकलन।

व्याख्या

उपरोक्त तालिका के अनुसार 92 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने माना कि लॉकडाउन के दौरान उनकी बचत का अधिकांष हिस्सा आवष्यक जरूरतों को पूरा करने में समाप्त हो गया जबकि 8 प्रतिषत ने इसे नकार दिया। बचत न कर पाने वाले लोगों को लॉकडाउन के दौरान बहुत सी परेषानियों का सामना करना पड़ा। बचत के समाप्त होने पर मित्र एवं सम्बन्धियों आदि से उधार लेकर जीवन बचाया जा सका।

निष्कर्ष

कोरोना वायरस के चलते देष में लगाए गए लॉकडाऊन ने देष की अर्थव्यवस्था की कमर तोड़कर रख दी है। इस दौरान विभिन्न संगठनों द्वारा सर्वे किये गये। एक सर्वे के मुताबिक लॉकडाउन के कारण देष में लगभग 67 प्रतिषत श्रमिकों का रोजगार समाप्त हो गया। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक सर्वे में बताया गया कि शहरी क्षेत्रों में स्वरोजगार पर सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, जिसके

चलते 84 प्रतिषत लोगों का रोजगार चला गया। भारत सरकार ने इस संकट से निपटने के लिए 20 लाख करोड़ रूपये के प्रोत्साहन पैकेज की भी घोषणा की है। कुछ लोगों का मानना है कि कोरोना वायरस ने भारत को आत्मनिर्भर बनने और दुनिया में आगे बढ़ने का अवसर उपलब्ध कराया है। छोटे–छोटे व्यवसायों में लगे ऐसे व्यक्ति जो सरकारी प्रोत्साहन का लाभ लेने से वंचित रहे है। उनके लिए इस काल में बहुत मुष्किलों का सामना करना पड़ा।

सीएमआईइ के आंकड़ो पर गौर करें तो पता चलता है कि लॉकडाउन के तुरंत पहले के वक्त में 3.4 करोड़ लोग भारत में बेरोजगार थे। लॉकडाउन के बाद नौकरी गंवाने वाले 12 करोड़ लोगों में इस संख्या को जोड़ दिया जाये तो यह संख्या 15 करोड़ पहूंच जाती है। मौटे तौर पर कहा जा सकता है कि देष में 15 से 20 करोड़ लोग ऐसे हैं जिनके पास आजीविका का संकट आया है। लॉकडाउन के दौरान अध्ययन क्षेत्र के परिणाम शेष भारत से मिलते जुलते ही प्राप्त हुए हैं। अब हम काफी हद तक कोरोना संकट से उबरने में सफल हुए हैं परन्तु बेरोजगारी का संकट अभी भी हमारे ऊपर मंडरा रहा है। इससे निपटने के लिए सरकारी योजनाओं का लाभ प्रभावित लोगों तक पहूँचाना अति आवष्यक है।

सन्दर्भ–

1. डॉ0 जीत सिंह एवं डॉ0 प्रीति यादव, (2022)'' An Analysis of Employment Status During Covid times", Journal of Management & Entrepreneurship, Vol, 16, No. 1(VI), January-March, pp 125-129.
2. Sandeep Rawat and Kopal Saxena (2020), "Assessing the Impact of Covid-19 Pandemic on Economic Condition of Employees- with special reference ot Lucknow District of Uttar Pradesh"Ilkogretim Online-Elementary Education online, Vol 19, Issue 4, pp7080-7088.
3. Sona Mitra and Dipa Sinha, "Covid-19 and women's Labour Crisis", Economic and Political Weekly, April 24, 2021, Vol No. 17, pp 44-51.
4. Indrajit Bairagya (2021), ने "Effect of Covid-19 pandemic on the Rural Non-farm Self-employed in India: Does Skill Make a Difference?", Institute for Social and Economic Change, Dr.V.K.R.V.Rao Road, Nagarbhavi Post Banglore-560072, Karnataka, India.
5. दिव्येन्दु राय (2020) ''लॉकडाउन, एक अनकही दास्तां''
6. Jessica Li ने ''Impact of Covid-19 on Self Employed Women in India" August,19, 2021.
7. www.bbc.com/hindi.